॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
504

श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितप्रणीता

# वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

'श्रीधरमुखोल्लासिनी' हिन्दी व्याख्या-समन्विता

( कृदन्त-प्रकरण )

(प्रत्येक सूत्रों में पद-प्रदर्शन, समास, अनुवृत्तिक्रम, सूत्रार्थ, भाष्य-मनोरमा-शेखर के अनुसार विस्तृत एवं सुगम व्याख्या, प्रयोगसिद्धि, क्लिष्ट रूपों की सिद्धि, उणादिप्रकरण की विशेष विवेचनात्मक व्याख्या एवं परिशिष्ट सहित)

( षष्ठ भाग )

व्याख्याकारः
श्रीगोविन्दाचार्यः

सम्पादिका
लक्ष्मी शर्मा

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

# विषयानुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| १. | कृदन्ते कृत्यप्रकरणम् | ००१ |
| २. | पूर्वकृदन्तप्रकरणम् | ०७४ |
| ३. | उणादिषु प्रथमः पादः | ४१३ |
| ४. | उणादिषु द्वितीयः पादः | ५२६ |
| ५. | उणादिषु तृतीयः पादः | ६०५ |
| ६. | उणादिषु चतुर्थः पादः | ६९६ |
| ७. | उणादिषु पञ्चमः पादः | ८३३ |
| ८. | उत्तरकृदन्तप्रकरणम् | ८६६ |
| ९. | कृदन्तभागस्य सूत्रसूचिका | १०७८ |
| १०. | कृदन्तभागस्य वार्तिकसूचिका | १०८७ |
| ११. | उणादिसूत्रसूचिका | १०९० |

# अथ कृदन्ते कृत्यप्रकरणम्

अब **कृदन्तप्रकरण** प्रारम्भ होता है। उत्तरार्ध के प्रारम्भ में कौमुदीकार ने प्रतिज्ञा की थी कि **प्रत्यया अथ कथ्यन्ते तृतीयाध्यायगोचराः** अर्थात् अब पाणिनीयाष्टाध्यायी के तृतीयाध्याय में होने वाले प्रत्यय कहे जा रहे हैं। धातु से होने वाले सभी प्रत्यय तृतीय अध्याय में ही हैं। कुछ ही प्रत्यय हैं, जो तृतीयाध्याय में होते हुये भी सुबन्त से हुये हैं, जो कि नामधातुप्रकरण में बताये गये हैं। धातु से दो ही प्रकार के प्रत्यय होते हैं- **तिङ्** और **कृत्**। तिङ् तो प्रत्याहार है जो तिप् से लेकर महिङ् तक के प्रत्यय हैं और वे धातुओं से विहित लकारों के स्थान पर होते हैं। कृत्प्रत्यय वे हैं जिनकी **कृदतिङ्** से कृत्संज्ञा होती है, जिसमें अण्, अच्, णमुल्, अनीयर् आदि आते हैं। धातु से होने वाले प्रत्ययों में तिङ् प्रत्ययों को छोड़कर शेष सारे प्रत्यय कृत् कहलाते हैं। प्रातिपदिक (शब्द) बनाने के लिए सबसे पहले धातुओं से कृत् प्रत्यय किये जाते हैं। कृत् प्रत्यय लगने से वह कृदन्त बन जाता है और उसकी **कृत्तद्धितसमासाश्च** से प्रातिपदिकसंज्ञा हो जाती है। कृदन्त के ज्ञान के विना व्याकरण का ज्ञान सम्भव ही नहीं है। कहीं-कहीं भाषा में तिङन्त-क्रिया के विना कृदन्त-क्रिया से ही सारा व्यवहार किया जाता है और संस्कृत साहित्य में कृदन्तों का प्रयोग बहुतायत होता है।

कृदन्त को चार भागों में बाँटा गया है- कृत्य, पूर्वकृदन्त, उणादि और उत्तरकृदन्त। कृत्-संज्ञा के अन्तर्गत कुछ प्रत्ययों की कृत्यसंज्ञा होती है। उन प्रत्ययों का प्रकरण होने के कारण इस प्रथम प्रकरण को कृत्यप्रकरण कहा जाता है।

धातु से तिङ् और कृत्प्रत्यय होते हैं तो पहले तिङ्प्रत्यय का प्रकरण इस लिये आया कि कृत्प्रत्यय तिङ्ज्ञान के पश्चाद्भावी है, क्योंकि **कृदतिङ्** से तिङ्भिन्न प्रत्ययों की कृत्संज्ञा होती है। अतः पहले तिङन्त का होना स्वाभाविक है।

## २८२९. धातोः ३।१।९१॥

**आ तृतीयसमाप्तेरधिकारोऽयम्।**

**'तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्'। 'कृदतिङ्'।**

**धातोः**। धातोः पञ्चम्यन्तम् एकपदमिदं सूत्रम्। इस सूत्र में **प्रत्ययः** और **परश्च** का अधिकार आ रहा है।